कुबेरनाथ राय की ललित निबंध यात्रा

पूनम सेठी

MS Received May, 2013; Reviewed November, 2013; Accepted November, 2013

साहित्य की एक रम्य विधा है ललित निबंध। निबंध के माध्यम से संस्कृति का रसबोधात्मक विश्लेषण ही ललित निबंध है और इस ललित निबंध विधा को पूर्णता प्रदान करने वाले वर्तमान युग के एक सशक्त ललित निबंधकार हैं कुबेरनाथ राय। कुबेरनाथ राय हिन्दी की ललित निबंध परम्परा के सर्वमान्य एवं विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। निबंध तो अनेक लेखकों ने लिखे है लेकिन केवल ललित निबंध लिखने वाले लेखकों में से एक महत्वपूर्ण नाम लिया जा सकता है और वह है कुबेरनाथ राय। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'बसंत आ गया है' से निबंध के जिस रूप की शुरूआत की थी वह 'अशोक के फूल' में अपने पूरे प्राण प्रवेग से व्यक्त हुआ था और निबंध के इस प्रकार को 'ललित' विशेषण दे दिया गया था। यह विशेषण इतना सटीक बैठा कि अन्य विशेषणों के कोलाहल में दबा नहीं और प्रखर से प्रखर होता हुआ द्विवेदी जी से लेकर विद्यानिवास मिश्र को पार करता हुआ कुबेरनाथ राय में अपने पूर्ण वैभव को प्राप्त हुआ। इस वैभव का आकार – प्रकार डॉ कृष्ण चन्द्र गुप्त ने इस प्रकार निर्धारित किया है –

"फूल पत्तियों के माध्यम से प्राचीन मध्य कालीन भारतीय सांस्कृतिक वैभव की जो भव्य तथा मार्मिक अभिव्यक्ति द्विवेदी जी ने की थी वह लोक संस्कृति के सहज रूप से सराबोर होकर विद्या निवास मिश्र में एक नए आयाम को छूती हुई कुबेरनाथ राय में व्यापक, गंभीर व विराट संस्कृति में लोकतत्वों के शाश्वत और सामयिक निष्कर्षों पर खरी उतरती गई। इन तत्वों के प्रतीकीकरण के द्वारा उनमें निहित अदम्य जिजीविषा, व्यापक सौन्दर्यबोध और सूक्ष्म शीलाचार का जो विश्लेषण, व्याख्या तथा विवेचना हुई वह अपना उदाहरण आप ही बन गई। ऋग्वेद से लेकर अधुनातन भारतीय साहित्य के अध्ययन–मनन तक उनकी सृजनात्मकता फैली हुई है। शास्त्रों की गूढ़ विवेचना से लेकर लोक संस्कृति के जीवंत सरस प्राणमय उपादानों तक जिसकी लेखन यात्रा हुई है उसका नाम है कुबेरनाथ राय"।1

कुबेरनाथ राय हिन्दी की ललित निबंध परम्परा के अति विशिष्ट हस्ताक्षर हैं और उन्हें यह अतिविशिष्टता प्रदान करने में किसी प्रसिद्ध व नामी आलोचक का हाथ नहीं रहा बल्कि इसे उन्होंने स्वयं के अध्यवसाय, गहन अध्ययन, चिंतन–मनन, सुचिंतित सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि, मूल्यपरक साहित्य विवेक आदि के माध्यम से अर्जित किया। उन्होंने संस्कृत व अंग्रेजी के मानक आर्षग्रंथों को पढ़ा और इन्हें पढ़ते हुए उनके भाव जगत, अभिव्यक्ति सौष्ठव और प्रतिपाद्य का सर्जनात्मक स्तर पर मूल्यांकन किया। कुबेरनाथ यद्यपि अंग्रेजी के अध्यापक तथा विद्वान थे तथापि हिन्दी की ललित निबंध विधा पर उनका असाधारण अधिकार है। मार्च 1964 में जब उनका एक निबंध धर्मयुग में प्रकाशित हुआ जो उसकी सम्पादकीय टिप्पणी में इनका परिचय इन शब्दों में दिया गया– 'चिंतन और अनुभूति से पगे ललित निबंधों की परम्परा में एक सर्वथा नवीन हस्ताक्षर।'

कुबेरनाथ राय ललित निबंध परम्परा को विकसित तथा पुष्ट करने वाले एक प्रमुख हस्ताक्षर है। इन्होंने अपने लेखन का विषय केवल ललित निबंधों को ही बनाया है। वे प्रकृति से शुद्ध ललित

निबंधकार है। गद्य की अन्य विधाओं को उन्होने अपवाद–रूप में ही ग्रहण किया है। उनके शैली–शिल्प की विशिष्टता इस बात में निहित है कि उन्होने रिपोर्ताज, संस्मरण, आत्मकथा (मोनोलॉग), लघुकथा, पत्र, संवाद आदि विधाओं को पंरपरित रूप में ग्रहण न करके इनका समाहार ललित निबंध के अंतर्गत ही कर दिया है, उसकी एक शैली के रूप में। शैली और विस्तार की दृष्टि से ललित निबंध को उनका यह एक बहुत बड़ा अवदान है।

कुबेरनाथ राय ने सन् 1968 में प्रकाशित 'प्रिया नीलकंठी' निबंध संग्रह के साथ हिन्दी निबंध जगत में पदार्पण किया तथा 2005 में प्रकाशित 'आगम की नाव' के साथ बीस निबंध–संग्रह देकर अपने पाठकों को आनन्द–विभोर, तृप्त व रस से सरोबार कर दिया। श्री राय ने विपुल परिमाण में हिन्दी साहित्य को वैभव सम्पन्न किया है और साथ ही कलात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा शैलीकारिता के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। अंग्रेजी साहित्य के विद्वान होने के बावजूद उनकी पूर्ण निष्ठा भारतीय संस्कृति व संस्कृत वांड़.मय के प्रति रही है तथा परम्पराप्रिय लेखक के रूप में एवं भारत के गौरवमय अतीत के व्याख्याता के रूप में उनका समूचा लेखन स्मरणीय है। समकालीन लोक जीवन और ग्रामीण संस्कृति के मूल से लेकर महानगरीय सभ्यता तक के व्यापक परिवेश की परम्पराएँ एवं मान्यताएं उनके ललित निबंधों में अभिव्यक्त हुई हैं।

मुख्य शब्दः कुबेरनाथ राय, ललित निबन्ध लेखन, ललित निबन्ध संग्रह, लेखन के प्रमुख आयाम, लेखन का उद्देश्य

कुबेरनाथ राय हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी तीनों भाषाओं के नये–पुराने साहित्य के अध्येता, चिन्तक और भावुक कलाकार हैं। इन्होंने भारतीय इतिहास, पुराण, पुरातत्व और दर्शन आदि विविध एवं विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन किया, भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति इनके मन में गहरा अनुराग है, इस गहन अध्ययन व मनन से उनका ललित निबंध साहित्य समृद्ध हो उठा है ।

सन् 1962 से 1996 तक लगभग पैंतीस वर्षो के अनवरत सृजन काल में श्री राय ने लगभग चार सौ निबंधों का सृजन किया है जिनमें ललित निबंध ही संख्या में अधिक है, उनके समस्त प्रकाशित संग्रह इस प्रकार है :–

1. प्रिया नीलकंठी
2. रस आखेटक
3. गंधमादन
4. विषाद योग
5. निषाद–बांसुरी
6. पर्णमुकुट
7. महाकवि की तर्जनी
8. पत्र मणिपुतुल के नाम
9. कामधेनु
10. मन–पवन की नौका
11. किरात–नदी में चंद्रमधु
12. दृष्टि–अभिसार
13. त्रेता का वृहत्साम
14. मराल
15. उत्तर–कुरू
16. चिन्मय भारत
17. वाणी का क्षीर–सागर
18. अंधकार में अग्नि–शिखा
19. रामायण महातीर्थम्
20. आगम की नाव

इन निबंध संग्रहो के अतिरिक्त कुबेरनाथ राय का एक काव्य संग्रह 'कंथामणि' 1998 में प्रकाशित हुआ और स्वामी सहजानंद सरस्वती ग्रंथावली की भूमिका में लिखे गये लेखों का संपादन 2008 में 'पुनर्जागरण के शलाका पुरूष स्वामी सहजानंद सरस्वती' नाम से किया गया ।

भारतीय ज्ञानपीठ के दसवें 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' ग्रहण करने के अवसर पर दिए गये स्वीकृति भाषण में अपने ललित–लेखन के बारे में श्री राय ने कहा था कि 'साहित्य लेखन में मेरी विधा है निबंध, विशेषतः ललित–निबंध, विषयवस्तु की दृष्टि से मेरे लेखन की मुख्य दिशाएँ इस प्रकार हैं :–

(1) भारतीय साहित्य, (2) गंगातीरी लोक जीवन और आर्येतर भारत, 3) रामकथा,

(4) गॉधी दर्शन और (5) आधुनिक विश्व चिंतन। ''परंतु इन सारे विषय क्षेत्रों में उद्देश्य रहा है मनुष्य को पृथ्वी और ईश्वर से जोड़कर प्रस्तुत करना, ...मेरा सम्पूर्ण लेखन, मेरे सारे ललित निबंध प्रकारांतर से मनुष्य, पृथ्वी और ईश्वर के इसी समायोजन, इसी सामंजस्य की ओर इंगित करते हैं, इनका रसबोध की शैली में उद्घाटन करना ही मैं अपने साहित्य का परम दातव्य मानता हूँ, परम धर्म मानता हूँ, हॉ यह सही है कि मनुष्य, प्थ्वी और ईश्वर को पहचानने की और इस समायोजन की ओर इंगित करने की भाषा, मेरी शब्दावली, मेरे मुहावरे नितांत भारतीय है।''2

अपने सम्पूर्ण ललित–निबंध लेखन में श्री राय ने चार बातों पर विशेष बल दिया है :– (1) इनके निबंधो में मनुष्य को पृथ्वी और ईश्वर से जोड़कर एक 'त्रिक' के रूप में प्रस्तुत किया गया है, (2) वे साहित्य को राजनीति का अनुचर मानने के लिए तैयार नहीं है, (3) 21 वीं शती के द्वार पर आकर आज का बुद्धिजीवी एक वैचारिक शून्य में अवरूद्ध हो गया है और इस स्थिति से मुक्त होने का एकमात्र उपाय है 19वीं शती के बहुप्रचारित अर्धसत्यों और पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर नये सिरे से सोचना और नयी अवधारणाओं को लब्ध करना, (4) इन सबके लिए देसी प्रज्ञा की जमीन पर खड़े होकर नयी स्थितियों को सोचना–समझना होगा, मूल–संश्लिष्ट होना होगा ।

अपनी इन्ही अवधारणाओं के इर्द–गिर्द श्री राय ने अपना सृजन–कार्य किया, उनका सर्वश्रेष्ठ असम में ही रचा गया जहॉ वे नलवारी कॉलेज में अंग्रेजी के व्याख्याता थे, अपने प्रिय अंग्रेजी साहित्यकारों यथा होमर, वर्जिल व शेक्सपियर पर उन्होंने तीन मोनोलॉग की रचना की है, 'ओडिसियस' पर आधारित दो ललित निबंध 'एक ग्रीक प्रोषितपतिका का आत्मकथ्य' तथा 'यायावर–रस' उनकी पाश्चात्य साहित्य–दृष्टि तथा आर्य संस्कृति का ठोस उदाहरण है । कुबेरनाथ राय के ललित–लेखन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय पक्ष है, उनकी वैचारिक–दृष्टि तथा उनकी सहज पर गरिमामय बौद्धिकता । उनके अधिकांश ललित–निबंध संग्रहो में उनके वैचारिक लेख, अनुचिंतन तथा टिप्पणियॉ संग्रहीत है। अस्तित्ववाद, समाजवाद और मार्क्सवाद श्री राय के लेखन के प्रधान विषय रहे हैं। अस्तित्ववाद पर श्री राय ने अत्यन्त सटीक, सार्थक व विस्तृत टिप्पणी की है। उन्होंने कीर्केगार्द, मार्सेल, कामू व सार्त्र का जो विश्लेषण किया है वह अप्रतिम है और हिन्दी में उसका जोड़ नहीं है। हर्बर्ट मारक्यूज के नव्यवाम पर उनकी विस्तृत टिप्पणी उनकी बौद्धिक प्रखरता की साक्षी है, वे बाल्मीकि, कालिदास, तुलसीदास, होमर, शेक्सपियर, रवीन्द्रनाथ आदि के गहन अध्येता हैं।

भारतीय संस्कृति के उदात्त स्वरों को रेखांकित करना, अपने प्रकृत भारतीय स्वरूप को पहचानना, अपना सही अभिज्ञान प्राप्त करना तथा भारत का चिन्मय शक्तिशाली गरिमामय व्यक्तित्व तलाश करना और उसकी प्रतिष्ठा करना श्री राय के निबंध लेखन का प्रमुख उद्देश्य है । अपने साहित्य

व लोकधर्म की मूल शक्ति की ओर संकेत करना भी श्री राय के ललित निबंध लेखन का उद्देश्य है । हिन्दी भाषी समाज के पास जो कुछ सही व सर्वोत्कृष्ट साहित्य है, उसकी प्राणशक्ति का मूल लोकधर्म व लोक संस्कृति में है । श्री राय का साहित्य विलुप्त होती भारतीय संस्कृति की खोज की एक छटपटाहट के रूप में हमारे सामने आता है, सांस्कृतिक व लोकजीवन दोनों को समन्वित और समंजित करने के लिए ये कभी अतीत से वर्तमान तथा कभी वर्तमान से अतीत की ओर भ्रमण करते हैं। इनके निबंध भारतीय सभ्यता, संस्कृति, दर्शन व मनोविज्ञान की व्याख्या–पुनर्व्याख्या तथा संधान व अनुसंधान हैं। श्री राय एक ऐसे अनुसंधित्सु अथवा गोताखोर है, जो भारतीय संस्कृति एवं लोक जीवन की गहराई में जाकर प्राचीन एवं अर्वाचीन तथ्यों की जॉच–पड़ताल करते हैं ।

कुबेरनाथ राय अनवरत रूप से साहित्य के शास्त्रीय विषयों और वैचारिक स्तर पर गंभीर समस्याओं को लेकर सुललित, सुसंगठित और सुसाधित निबंध लिखकर हिन्दी निबंध साहित्य को समृद्ध बनाते रहे । सुदूर अतीत के पौराणिक पर्यावरणों में लिपटाकर वर्तमान जीवन का साकार स्वरूप उभार देने में लेखक सिद्धहस्त रहे हैं। अपने युग परिवेश की समस्याओं को इतिहास–पुराण के संदर्भ में एक नूतन आयाम के साथ स्वतंत्र चिन्तन मनन की परिधियों में रूपायित करना साहस का काम है, कुबेरनाथ राय ने यह कार्य भली–भॉति किया है ।

निबंध विधा के विस्तारक तथा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित श्री राय के उत्कृष्ट निबंध साहित्य से हिन्दी गद्य न केवल समृद्ध और गौरवान्वित हुआ है, अपितु उनकी तत्सम्बन्धी मौलिक दृष्टि भी उद्घाटित हुई है, भ्रामक धारणाओं का खंडन और नवीन उद्भावनाओं की सृष्टि हुई है, श्री राय के निबंधों का मूल स्वर संस्कृति प्रधान है। उनके निबंध संग्रहों में वेदों से लेकर आज तक की समस्त सांस्कृतिक चेतना का विवेचन, विश्लेषण तथा समन्वय तो हुआ ही है, साथ ही गुण–दोषमय संस्कृति का सम्पूर्ण परिदृश्य विशदता के साथ अभिव्यक्त हुआ है । सांस्कृतिक मूल्यों से स्पंदित एवं उद्भासित उनके समग्र साहित्य में भारतीय संस्कृति पुनराविष्कृत, पुनर्जीवित तथा पुनः संस्कारित हो उठी है और उसका मूल भास्वर रूप हमारे समक्ष उपस्थित हुआ है।

निष्कर्षत : कुबेरनाथ राय ऋषि–परम्परा के एक मनीषी रचनाकार हैं, जिन्होंने भारतीय चिन्तन तथा हिन्दी ललित निबंध दोनों को एक नयी ऊँचाई एवं नया आयाम दिया है । उनके निबंध संग्रह हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं तथा हिन्दी निबंध साहित्य में उनका अप्रतिम स्थान है।

सन्दर्भ सूची

[1]डॉ कृष्ण चन्द्र गुप्त : निवेदिता, रजत जयंती अंक, 1997 : 208–209

[2]कुबेर नाथ राय : मेरी सृष्टि, मेरी दृष्टि : रजत जयंती अंक, 1997 : 30